ग्रामीण अर्थव्यवस्था एंव महिलाओं की भूमिका

डॉ0 विनोद कुमार
सह–आचार्य, सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
दीन दयाल उपाध्याय कौशल केन्द्र,
रूद्रपुर (उधम सिंह नगर) उत्तराखण्ड
ईमेल - vinodbaoli@gmail.com

सारांश

सामान्यतः यह देखा गया है कि विकसित देशों में शहरी क्षेत्र का प्रभुत्व बना रहता है जबकि आर्थिक दृष्टि से पिछड़े देशों में गामीण क्षेत्र प्रधान होते है। भारत जैसे विकासशील राष्ट्र में अर्थव्यवस्था की बागडोर ग्रामीण क्षेत्र को ही सम्भालनी होती है। इसी क्षेत्र में उन सब परिस्थितियों का निर्माण होता है, जो सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने में समर्थ होती है। भारत की आत्मा गाँव में निवास करती है। गाँव के विकास के अभाव में भारत की समृद्धि, सम्पन्नता व आत्मनिर्भरता अर्थहीन है। भारतीय समाज में महिलाऐं परिवार की मुख्य धुरी होती हैं ,जो कि एक गृहिणी के रूप में राष्ट्र– निर्माण और विकास में अपनी उत्कृष्ट भूमिका निभाती हैं। ग्रामीण अर्थव्यवस्था के कृषि क्षेत्र में महिलाओं के योगदान का ग्रामीण अर्थव्यवथा के विकास में योगदान, योगदान के लिए प्रेरणा स्त्रोत, कार्य करने से पूर्व कार्य के प्रति दृष्टिकोण एंव ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास में आयी रूकावटों के कारणों को जानने के लिए हमने जनपद बागपत् के सभी विकास खण्डों से 16 गावों की 416 महिलाओं से व्यक्तिगत साक्षात्कार कर उनके योगदान को जानने का प्रयास किया है। जिससे निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए। प्रस्तुत शोध पत्र इसी का ही एक विश्लेषात्मक अध्ययन है।

प्रस्तावना

सामान्यतः यह देखा गया है कि विकसित देशों में शहरी क्षेत्र का प्रभुत्व बना रहता है जबकि आर्थिक दृष्टि से पिछड़े देशों में गामीण क्षेत्र प्रधान होते है। भारत जैसे विकासशील राष्ट्र में अर्थव्यवस्था की बागडोर ग्रामीण क्षेत्र को ही सम्भालनी होती है। इसी क्षेत्र में उन सब परिस्थितियों का निर्माण होता है, जो सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने में समर्थ होती है। भारत की आत्मा गाँव में निवास करती है। गाँव के विकास के अभाव में भारत की समृद्धि, सम्पन्नता व आत्मनिर्भरता अर्थहीन है। भारत की 2001 की जनगणना के अनुसार 102.70 करोड़ जनसंख्या है, जिनमें 53.12 करोड़ पुरुष तथा 49.57 करोड़ महिलायें हैं। देश की साक्षरता दर 65.13 प्रतिशत है, जिसमें पुरुष साक्षरता 75.85 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता 54.46 प्रतिशत है। ग्रामीण जनसंख्या 72.22 प्रतिशत है लेकिन भारत

की 2011 की जनगणना के अनुसार 121.8 करोड़ जनसंख्या है, जिनमें 62.32 करोड़ पुरुष तथा 58.75 करोड़ महिलायें हैं। देश की साक्षरता दर 73.0 प्रतिशत है, जिसमें पुरुष साक्षरता 82.9 प्रतिशत महिला साक्षरता 64.6 प्रतिशत है। ग्रामीण जनसंख्या 68.8 प्रतिशत है। देश में 6.05 लाख गाँव है। अतः इस प्रकार भारत की अर्थव्यवस्था को ग्रामीण अर्थव्यवस्था कहा जा सकता है।

कृषि क्षेत्र

कृषि क्षेत्र में वे सभी लोग शामिल किये जाते हैं, जिनके निर्वाह का साधन प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से खेती–बाड़ी है तथा इसमें खेती से सम्बन्धित सभी कार्यों को सम्मिलित किया जाता है। खेती–बाड़ी अथवा कृषि, जो कि ग्रामीण समुदाय का प्रमुख व्यवसाय है अब जीवन निर्वाह का साधन मात्र ही नहीं रह गया है। किसान मात्र अपनी और अपने परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति के वास्ते ही फसलों का उत्पादन नहीं करता बल्कि परिवार की उन्नति के साथ–साथ राष्ट्र को आत्म निर्भर बनाने की बात भी सोचता है।

भल्ला (1976) और भारद्वाज (1988) अपने अध्ययन के अन्तर्गत नवीन कृषि प्रौद्योगिकीय से युक्त क्षेत्रों में खेतीहार श्रमिक के रूप में दैनिक महिला श्रम की उपयोगिता का उल्लेख किया है।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद और डीआरडब्लूए (2016) की ओर से नौ राज्यों में किये गये एक शोध से पता चलता है कि प्रमुख फसलों के उत्पादन में महिलाओं की भागीदारी 75 फीसदी तक रही है। इतना ही नहीं, बागवानी में यह आंकड़ा 79 प्रतिशत और फसल कटाई के बाद के कार्यों में 51 फीसदी तक ग्रामीण महिलाओं की भागीदारी है। इसके अलावा पशुपालन में महिलाओं की भागीदारी 58 प्रतिशत और मछली उत्पादन में यह आंकड़ा 95 प्रतिशत तक है। सिर्फ इतना ही नहीं, नेशनल सैंपल सर्वे ऑर्गनाइजेशन के आंकड़ों की मानें तो 23 राज्यों में कृषि, वानिकी और मछली पालन में ग्रामीण महिलाओं का कुल श्रम की हिस्सेदारी 50 है। इसी रिपोर्ट के अनुसार, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश और बिहार में ग्रामीण महिलाओं की भागीदारी का प्रतिशत 70 प्रतिशत रहा है। इसके अलावा पश्चिम बंगाल, पंजाब, तमिलनाडु और केरल में महिलाओं की भागीदारी 50 फीसदी है। वहीं, मिजोरम, आसाम, अरुणाचल प्रदेश, छत्तीसगढ़ और नागालैंड में यह संख्या 10 प्रतिशत है। शोध के अनुसार, पौध लगाना, खरपतवार हटाना और फसल कटाई के बाद ग्रामीण महिलाओं की सक्रिय भागीदारी शामिल है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य :

1. ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास में महिलाओं के योगदान का अध्ययन किया है।
2. महिलाओं का कृषि क्षेत्र में योगदान एवं योगदान के लिए प्रेरणा स्रोत का अध्ययन किया है।
3. महिलाओं का कृषि क्षेत्र में योगदान एवं कार्य करने से पूर्व कार्य के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन किया है।
4. महिलाओं का कृषि क्षेत्र में योगदान एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास में आयी रुकावटों के कारण

का अध्ययन किया है।

5. शोध अध्ययन से आवश्यक निष्कर्ष प्राप्त करना एवं प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर आवश्यक नीतिगत सुझाव प्रदान करना है।

शोध–प्रविधियां

ग्रामीण अर्थव्यवस्था के कृषि क्षेत्र में महिलाओं के योगदान का ग्रामीण अर्थव्यवथा के विकास में योगदान, योगदान के लिए प्रेरणा स्त्रोत, कार्य करने से पूर्व कार्य के प्रति दृष्टिकोण एंव ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास में आयी रूकावटों के कारणों को जानने के लिए हमने उत्तर प्रदेश के जनपद बागपत् को चुना है। सोउददेश्य विचार पूर्ण निदर्शन प्रणाली के द्वारा जनपद में से 6 विकास खण्ड बागपत्, बिनौली, बडौत, छपरौली, खेकडा एंव पिलाना में से 4 विकास खण्डबागपत्, बडौत, छपरौली, एंव खेकडा जनपद के कुल 314 गॉव में से 16 गावों (प्रत्येक विकास खण्ड से 4 गॉव) का चयन किया गया है। प्रत्येक गांव से 26 महिलाओं का चयन किया गया है। इस प्रकार प्रत्येक विकास खण्ड से 104 महिलाओं का अर्थात कुल 416 महिलाओं से व्यक्तिगत साक्षात्कार कर उनके योगदान को जानने का प्रयास किया है। साक्षात्कार से प्राप्त आकडों का वर्गीकरण एंव विश्लेषण कर निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए है।

1 महिलाओं का कृषि क्षेत्र में योगदान एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास में योगदान का विश्लेषण :

तालिका संख्या 1 से स्पष्ट होता है कि कृषि क्षेत्र में पूर्ण रूप से योगदान करने वाली महिलायें सर्वाधिक अनुपात में 36.0: मजबूरी में योगदान करती पायी गयी है तथा सबसे कम अनुपात में 3.0: महिलायें स्वेच्छा से योगदान करती पायी गयी है। आंशिक योगदान करने वाली महिलायें सर्वाधिक अनुपात में 57.6: मजबूरी में योगदान करती पायी गयी है तथा सबसे कम अनुपात में 55.8: दबाव में योगदान करती पायी गयी है। योगदान नहीं देने वाली महिलायें सर्वाधिक अनुपात में 100.0: जो किसी भी क्षेत्र में योगदान नहीं करती हैं, पायी गयी है तथा सबसे कम अनुपात में 6.4: महिलायें मजबूरी में अर्थव्यवस्था में तो योगदान करती हैं, लेकिन कृषि क्षेत्र में योगदान करती नहीं पायी गयी है।

तालिका संख्या 1

अर्थव्यवस्था में योगदान	कृषि क्षेत्र में योगदान			योग
	पूर्ण योगदान	आंशिक योगदान	योगदान नहीं	
1. स्वेच्छा से	2 (3.0)	37 (56.1)	27 (40.9)	66 (100.0)
2. दबाव में	35 (33.6)	58 (55.8)	11 (10.6)	104 (100.0)
3. मजबूरी में	45 (36.0)	72 (57.6)	8 (6.4)	125 (100.0)
4. योगदान नहीं			121 (100.0)	121 (100.0)
योग	82 (19.8)	167 (40.1)	167 (40.1)	416 (100.0)

कोष्ठक में प्रतिशत अंकित हैं।

2 महिलाओं का कृषि क्षेत्र में योगदान एवं योगदान के लिए प्रेरणा स्रोत का विश्लेषणः

तालिका संख्या 2 से स्पष्ट होता है कि कृषि क्षेत्र में पूर्ण रूप से योगदान करने वाली महिलायें सर्वाधिक अनुपात में 57.1ः अन्य (मित्र जन, पड़ौसी, ठेकेदार, रेडियो एवं टी0वी0, समाचार पत्र एवं पत्रिका) प्रेरणा स्रोतों से प्रभावित होकर योगदान करती पायी गयी हैं तथा सबसे कम अनुपात में 18.4ः महिलायें आत्म–चेतना से योगदान करती पायी गयी हैं। आंशिक योगदान करने वाली महिलायें सर्वाधिक अनुपात में 63.2ः आत्म–चेतना से योगदान करती पायी गयी हैं तथा सबसे कम अनुपात में 35.7ः महिलायें अन्य प्रेरणा स्रोतों से प्रभावित होकर योगदान करती पायी गयी हैं। योगदान नहीं देने वाली महिलायें सर्वाधिक अनुपात में 100.0ः जो किसी भी क्षेत्र में योगदान नहीं करती, पायी गयी हैं तथा सबसे कम अनुपात में 7.2ः महिलायें अन्य प्रेरणा स्रोतों से प्रभावित होकर अर्थव्यवस्था में तो योगदान करती हैं, लेकिन कृषि क्षेत्र में योगदान करती नहीं पायी गयी है।

तालिका संख्या 2

प्रेरणा स्रोत	कृषि क्षेत्र में योगदान			योग
	पूर्ण योगदान	आंशिक योगदान	योगदान नहीं	
1. आत्म चेतना	9 (18.4)	31 (63.2)	9 (18.4)	49 (100.0)
2. मातृपक्ष एवं पितृपक्ष	23 (30.2)	42 (55.3)	11 (14.5)	76 (100.0)
3. ससुराल पक्ष	34 (26.9)	76 (60.4)	16 (12.7)	126 (100.0)
4. गुरुजन		8 (50.0)	8 (50.0)	16 (100.0)
5. अन्य	16 (57.1)	10 (35.7)	2 (7.2)	28 (100.0)
6. योगदान नहीं			121 (100.0)	121 (100.0)
योग	82 (19.8)	167 (40.1)	167 (40.1)	416 (100.0)

कोष्ठक में प्रतिशत अंकित हैं।

3 महिलाओं का कृषि क्षेत्र में योगदान एवं कार्य करने से पूर्व कार्य के प्रति दृष्टिकोण का विश्लेषण :

तालिका संख्या 3 से स्पष्ट होता है कि कृषि क्षेत्र में पूर्ण रूप से योगदान करने वाली महिलायें सर्वाधिक अनुपात में 69.7ः पायी गयी हैं, जिनमें कार्य करने से पूर्व कार्य के प्रति "आर्थिक एवं शारीरिक शोषण का भय" पाया गया है तथा सबसे कम अनुपात में 12.7ः महिलायें, ऐसी पायी गयी हैं, जिनमें कार्य करने से पूर्व कार्य के प्रति 'उत्साह' पाया

गया है। आंशिक योगदान करने वाली महिलायें सर्वाधिक अनुपात में 74.4: पायी गयी हैं, जिनमें कार्य करने से पूर्व कार्य के प्रति 'डर' पाया गया तथा 30.3: महिलायें ऐसी पायी गयी है, जिनमें कार्य करने से पूर्व कार्य के प्रति 'आर्थिक और शारीरिक शोषण का भय' पाया गया है। योगदान नहीं देने वाली महिलायें सर्वाधिक अनुपात में 100.0: जो किसी भी क्षेत्र में योगदान नहीं करती, पायी गयी है तथा सबसे कम अनुपात में 3.8: महिलायें, अर्थव्यवस्था में तो योगदान करती है, लेकिन अल्प आयु में बच्चों के कारण कृषि क्षेत्र में योगदान करती नहीं पायी गयी है।

तालिका संख्या 3

महिलाओं का कृषि क्षेत्र में योगदान एवं कार्य करने से पूर्व कार्य के प्रति दृष्टिकोण का वितरण

कार्य के प्रति दृष्टिकोण	कृषि क्षेत्र में योगदान			योग
	पूर्ण योगदान	आंशिक योगदान	योगदान नहीं	
1. डर था	9 (10.9)	61 (74.4)	12 (14.7)	82 (100.0)
2. झिझक थी	16 (29.6)	33 (61.1)	5 (9.3)	54 (100.0)
3. उत्साह था	7 (12.7)	29 (52.7)	19 (34.6)	55 (100.0)
4. अल्पायु के बच्चें	8 (30.8)	17 (63.4)	1 (3.8)	26 (100.0)
5. पूर्ण भूगतान न होने की चिन्ता	8 (36.4)	9 (40.9)	5 (22.7)	22 (100.0)
6. आर्थिक एवं शारीरिक शोषण का भय	23 (69.7)	10 (30.3)		33 (100.0)
7. अन्य	11 (47.8)	8 (34.8)	4 (17.4)	23 (100.0)
8. योगदान नहीं			121 (100.0)	121 (100.0)
योग	82 (19.8)	167 (40.1)	167 (40.1)	416 (100.0)

कोष्ठक में प्रतिशत अंकित हैं।

4 महिलाओं का कृषि क्षेत्र में योगदान एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास में आयी रुकावटों के कारण का विश्लेषण :

तालिका संख्या 4 से स्पष्ट होता है कि कृषि क्षेत्र में पूर्ण रूप से योगदान करने वाली महिलायें 27.8: के सामने कोई रुकावट नहीं आयी है। आंशिक योगदान करने वाली महिलायें 56.6: के सामने भी कोई रुकावट नहीं आयी है। योगदान नहीं देने वाली महिलायें सर्वाधिक अनुपात में 100.0: के सामने मातृपक्ष एवं पितृपक्ष से, ससुराल पक्ष से, बच्चों से एवं अन्य के कारण एवं अन्य कारणों से रुकावट के कारण योगदान करती नहीं पायी गयी है तथा सबसे कम अनुपात में 15.6: महिलायें, जो अर्थव्यवस्था में योगदान करती है, लेकिन कृषि क्षेत्र में योगदान करती नहीं पायी गयी हैं।

तालिका संख्या 4
महिलाओं का कृशि क्षेत्र में योगदान एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास में आयी रुकावटों के कारण का वितरण

रुकावट के कारण	कृषि क्षेत्र में योगदान			योग
	पूर्ण योगदान	आंशिक योगदान	योगदान नहीं	
1. मातृपक्ष एवं पितृपक्ष			10 (100.0)	10 (100.0)
2. ससुराल पक्ष			77 (100)	77 (100.0)
3. बच्चों से			22 (100.0)	22 (100.0)
4. अन्य			12 (100.0)	12 (100.0)
5. कोई रुकावट नहीं	82 (27.8)	167 (56.6)	46 (15.6)	295 (100.0)
योग	82 (19.8)	167 (40.1)	167 (40.1)	416 (100.0)

कोष्ठक में: अंकित हैं।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते है कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास में महिलाओं के योगदान एक नये रूप में उभर कर सामने आ रहा है। जिससे अर्थव्यवस्था में एक नया संचार उत्पन्न हो रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 Bhalla, S. 1976. *New Relations in Production in Haryana Agriculture, Economic and Political Weekly,* Review of Agriculture.

2 Bharadwaj, K. 1988. *On the Formation of the Labour Markets in Rural Asia (Mimeo) CESP School of Social Sciences*, JNU, New Delhi.

3 भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद और डीआरडब्लूए की ओर से नौ राज्यों में किये गये एक शोध 30 नवम्बर 2016.

4 *भारत की जनगणना 2001,* शृंखला–1, पृ0 9

5 *भारत की जनगणना 2011,* शृंखला–1, पृ0 11